

ए संपादकीय

कृषि का बदलता अर्थशास्त्र

कृषि सदा से ही भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है। भारत की कुल आबादी का 74 फीसदी हिस्सा गांवों में रहता है। जहिर सी बात है यह ज्यादा से ज्यादा लोगों को रोजगार प्रदान करती है। बदलने वाले में कृषि ने भी अपना स्वरूप बदला है, हम पारंपरिक खेतों को बहुत पिछे छोड़ इंस्टीयल फार्मिंग को अपना रखे हैं। भारतीय कृषि शुरू से ही सार्वजनिक निवेश की मार झोल रखी है। कृषि के क्षेत्र में सार्वजनिक निवेश लगाया था। सन् 60-61 के दौरान कृषि में सार्वजनिक निवेश की हिस्सेवारी 35 प्रतिशत थी जो सन् 2000 तक आते धटकर 23 प्रतिशत हो गई, जबकि इस समय व्यक्तिगत निवेश 66 प्रतिशत से बढ़कर 76.4 प्रतिशत हो गया था। यदि सरकारी निवेश का बात करें तो अस्सी के दशक के शुरूआती वर्षों में शुद्ध धरेलू उत्पाद का 9 प्रतिशत अंश कृषि में भूमि के तौर पर निवेश कर दिया गया था। नबे के दशक दौरान यह धटकर मात्र 6 प्रतिशत रह गया है। अगर सकल धरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) को देखें तो इसमें भी लगातार गिरावट आई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय जी.डी.पी. में कृषि की हिस्सेदारी लगभग 70 फीसदी थी, जो नबे के दशक में 2 फीसदी के आसपास पहुँच गई। सन् 2008 में जी.डी.पी. में कृषि की भागीदारी 16.54 फीसदी रही, सन् 2009-10 में यह गिरकर 15.7 फीसदी पर आ गया और अपनी यह 14.6 पर दिका हुआ है। इस प्रकार के अकड़े जी.डी.पी. में लगातार गिरावट की दिखा रही है। सरकारी उदासीनता तेसे खिचकर पर आ पहुँचा है, जहां कृषि उत्पादों की कीमत बढ़ने पर राश्वपत्र का बयान आता है कि इससे कृषकों की स्थिति में सुधार हुआ है। इस रिपोर्ट के मुताबिक भारत की कुल आबादी का 77 प्रतिशत जनसंख्या प्राप्तिदृ 20 रुपये से भी कम में जीवन यापन कर रहा है। इन लोगों की बदलाई के पीछे प्रमुख कारणों में सरकारी उत्पादन तात्परी या राज्यों का अनियन्त्रित विकास है। आजादी के समय में भारतीय कृषि पूर्णस्पेष्ट वर्षी पर निर्भर था। खाद्यान्नों की निम्न उत्पादकता के कारण भारत को अमेरिका से अनाज आयात करना पड़ता था। भारतीय कृषि का सबसे क्रांतिकारी काल 1966-84 का काल माना जाता है। इस काल में एक नए युग का सूचापात हुआ। यह था अब उत्पादन में आत्मनिर्भरत। तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने जब जय जवाहर जय तक कई लोगों की कृषि ढांग से फसल चकों को अपनाना चाहिये ताकि हम खेतों को अधिक से अधिक लाभदायक बना सकें।

“किसी निश्चित क्षेत्र पर, निश्चित अवधि में, निश्चित फसलों का इस प्रकार हरे फेर कर कर कम से उगाया जाना कि भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट न हो, कम से कम क्षेत्रों की जलवायु के अनुकूल हो।” 2 भूमि की किस्म के अनुसार ही फसल-चक में फसलों को अपनाना चाहिये। फसल-चक में फसलों को हरे फेर अथवा शस्य-चक कहलाता है। “किसी निश्चित क्षेत्र पर एक निश्चित अवधि तक फसलों को इस प्रकार हरे-फेर कर बोना, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति का हास न हो, फसल-चक कहलाता है।” 4 मनुष्य तथा पशु शक्ति की उपलब्धता - मनुष्य और पशु शक्ति को अपनी फसलों का उत्पादन भेजने के लिए अनुकूल फसल-चक अपनाने

निम्नलिखित कारकों पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इन कारकों का बहुत बड़ा प्रभाव फसल-चक पर पड़ता है। 1 जलवायु - विभिन्न प्रकार की फसलों के लिए विभिन्न प्रकार की जलवायु की आवश्यकता होती है। यह निम्नता आवश्यक चाहिए।

5 धरेलू आवश्यकता - कृषकों को ऐसे ही फसलों को उगाना चाहिए जिनसे उनकी अधिकतम धरेलू आवश्यकताएं पूर्ण होती रहती हैं। अतः धरेलू आवश्यकताओं को उगाने में रख कर फसले उगानी चाहिए। 6 बाजार की मांग एवं शहर

की सुविधाएं एवं फसलों की मांग के अनुसार फसलें फसल-चक में शामिल करना चाहिए। 8 खेती का प्रकार - खेती के घरेलू आवश्यकताओं पर आ युक्त है। अतः धरेलू आवश्यकताओं को उगानी में रख कर फसले उगानी चाहिए। 9 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 10 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 11 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 12 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 13 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 14 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 15 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 16 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 17 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 18 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 19 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 20 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 21 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 22 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 23 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 24 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 25 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 26 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 27 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 28 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 29 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 30 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 31 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 32 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 33 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 34 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 35 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 36 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 37 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 38 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 39 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 40 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 41 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 42 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 43 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 44 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 45 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 46 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 47 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 48 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 49 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 50 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 51 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 52 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 53 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 54 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 55 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 56 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 57 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 58 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 59 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 60 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 61 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 62 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 63 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 64 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 65 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 66 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 67 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 68 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 69 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 70 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 71 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 72 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 73 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 74 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 75 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 76 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 77 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 78 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 79 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 80 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 81 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 82 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 83 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 84 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 85 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 86 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 87 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 88 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 89 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 90 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 91 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 92 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 93 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 94 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 95 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 96 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 97 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 98 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 99 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी चाहिए। 100 खेती का प्रकार - खेती के फसलों के लिए उगानी च

अमरुद में फसल सुरक्षा के उपाय

डॉ. पंकज शर्मा

प्रभारी कृषि विज्ञान केन्द्र, बानसूर (अलवर)

अमरुद की खेती भारत में सभी स्थानों पर की जाती है। राजस्थान में अमरुद प्रमुखता से उत्पादन, चित्तौड़गढ़, अजमेर, सर्वईमांझुर, कोटा, बूदी, जयपुर, ज्ञालालाड़ आदि जिलों में उत्पादन जाता है। गृह वाटिका में भी अमरुद को स्थान दिया जाता है। इसका फल मीठा, अच्छी सुगंध वाला, पाचक व स्वादित होता है। फलों में विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। फलों को ताजा खाने के अतिरिक्त जैली बनाने में प्रयोग किया जाता है। अमरुद के सफल उत्पादन में कीट-व्याधि प्रमुखता से रुकावट पैदा करते हैं, अतः किसानों को चाहिये कि वे समय रहते फसल की कीटों व रोगों से सुरक्षा कर अच्छा उत्पादन लेवें।

हानिकारक कीट**छाल भक्षक**

इस कीट की इलियां अमरुद की छाल, शाखाओं या तनों में छेद करके अंदर छिपी रहती है। रात्रि में ये इन छिपों से निकलकर पौधे की छाल को खाकर क्षति पहुंचाते हैं। ये रेशमी धागों से जुड़े हुये लकड़ी के टुकड़ों व अपने मल से बने रक्षक आवरण के नीचे खाती हुयी टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता बनाती है। अधिकांशतः

यह राते छिद्र के नीचे की तरफ होते हैं। एक छिद्र में एक इल्ली पायी जाती है। छोटे-पौधों में प्रकोप होने से पौधा बीमार दिखाई पड़ता है और बढ़वार रुक जाती है। शाखायें कमजोर पड़ जाती हैं।

नियंत्रण हेतु: रोगग्रसित सूखी शाखाओं को काट कर जला देना चाहिये। कीट का प्रकोप दिखाई देने पर छिपों में कोरेसिन 3 से 5 मिली। प्रति सुरंग पिचकारी की सहायता से डालें व छिद्र को गीती मिट्टी लगाकर बंद कर देवें। मोनाक्रोटोफास 2 मिली। प्रति लीटर पानी के घोल बनाकर शाखाओं पर छिड़काव करें।

मिली बग

यह कीट मुलायम ठहनियों, कोमल पत्तियों व पंखुड़ियों से विपक्ष कर रस चूसते रहते हैं। जिससे पौधे कमजोर हो जाते हैं व फल उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। क्षतिग्रस्त पत्तियां मुरझाकर सूख जाती हैं। अधिक प्रकोप होने पर फूल व फल कम आते हैं।

नियंत्रण हेतु: बागीचे में साफ-सफाई का ध्यान रखें। गर्मियों से शुरुआत कर सितंबर माह तक थालों की मिट्टी को प्रतिमाह पलटते रहें, इससे कीट के अड़े बाहर आकर अन्दर नहीं हो जाते हैं।

◆ व्यूनालापास 1.5 प्रतिशत चूर्ण 50 से 100 ग्राम प्रति पेड़ के हिसाब से थाले में 15–20 सेमी. गहराई पर मिलावें।

◆ यादि पौधों पर कीट चढ़ गये हो तो डायेमेथेट 1.5 मिली. अथवा फैथियान 1 मिली। प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें।

◆ शिशु कीटों को पेंड़ पर चढ़ने से राकेने हेतु नवम्बर माह में एल्काथिन (400 गेज) की 30–40 सेमी. चौड़ी पट्टी तने के चारों तरफ लगावें तथा इससे 15–20 सेमी. नीचे के भाग पर ग्रीस का लेप कर देवें।

फल भक्षी

इस कीट का प्रकोप वर्षा ऋतु में अधिकता से होता है। इस कीट के मैगर अमरुद के गूदे को खाती है। जिससे फल सँकर गिर जाते हैं, क्षतिग्रस्त फलों में कीट की सूंडियां भरी रहती हैं। फलों में किवन होने से गूदा सँड जाता है व पकने से पूर्ण ही फल गिर जाते हैं।

नियंत्रण हेतु: पौधों से गिरे हुये क्षतिग्रस्त फलों को इकट्ठा कर नष्ट कर देना चाहिये।

◆ एक लीटर पानी में 100 ग्राम चीनी व 10 मिली. मैलाथियान मिलाकर प्रलोभक तैयार करें। व इसे मिट्टी के प्यालों में 50 से 100 मिली. डालकर बाग में जगह—जगह पेड़ों पर टांग देवें।

◆ मैलाथियान 50 ई सी एक से दो मिली प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें।

◆ अमोनिया से बीनी ल्यॉर व आइसोबूटिनोल रसायन इसकों आकर्षित करते हैं अतः इन्हें कीटनाशी के साथ मिलाकर कीटों को नष्ट करिया जा सकता है। प्रोरोह व फल बेधक

इस कीट की इलियां अमरुद के फल, कलियों व एंव्र प्रोरोहों को क्षति पहुंचाते हैं। अंडों से निकलने के बाद यह फलों के गूदे, बीज, कलियों एंव्र प्रोरोहों के मुलायम उत्तरों को खाकर क्षति पहुंचाते हैं। क्षतिग्रस्त फलों से कीट के मल को बाहर निकलते हुये देखा जा सकता है। ऐसे फलों में सँडन हो जाती है व इनका बाजार में कोई भाव नहीं मिलता है। क्षतिग्रस्त कलियां व प्रोरोह मुरझाकर सूख जाते हैं।

नियंत्रण हेतु: क्षतिग्रस्त भागों को इकट्ठा कर नष्ट कर देवें।

◆ मैलाथियान 1.5 मिली. प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें।

अनार की तितली



इस कीट के लाखवा फलों के गूदे के अंदर घुसकर उसे खाते हैं। गूदे के अलावा ये बीजों को भी खा जाते हैं। क्षतिग्रस्त फलों में बदबू आने लगती है व पकने से पूर्ण ही गिर जाते हैं। लाखवा के घुसने के स्थान पर फल अंदर की तरफ दबा हुआ मालूम पड़ता है।

नियंत्रण हेतु: पौधों के चारों ओर सफाई रखें व गुड़ाइ करते रहें।

मैलाथियान 1.5 मिली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15–20 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।

प्रमुख हानिकारक रोग**स्थान वर्ण**

रोगग्रसित कच्चे फल सख्त व कार्कनुमा हो जाते हैं। इस रोग का प्रकोप वर्षा ऋतु में अधिक होता है। रोगग्रसित फलों पर काली चित्तियां पड़ जाती हैं और उनकी वृद्धि रुक जाती है। ऐसे फल पेंडों पर लगे रहते हैं और अस डड जाते हैं। पेंडों के सिरे से रोगी कोमल शाखायें नीचे की तरफ सूखने लगती हैं। ऐसी शाखाओं की पत्तियां झड़ने लगती हैं और इनका रंग भूरा हो जाता है।

नियंत्रण हेतु : सूखी टहनियों को काट देना चाहिये और इसके पश्चात मैन्कोजैब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फल आने तक 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये।

मैन्कोजैब

डॉ. राकेश कुमार शर्मा
विषय वस्तु विशेषज्ञ
(ज्यानिकी)
डॉ. स्वनिल दुबे
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
डॉ. सर्वेश त्रिपाठी
विषय वस्तु विश्व (कृषि
प्रसार)
कृषि धिज़ान केन्द्र,
रायसेन (स.प्र.)

अदरक का बानास्पतिक नाम जिन्जीबर आफीसिने लंपदहपइमत वृष्णिपदंसमद्ध तथा कुल जिन्जीबरे सीलंपदहपइमतंबमद्ध है। भारत विश्व के अयणी अदरक उत्पादन देशों में से एक है। मसाले के अतिरिक्त इसका औषधीय उपयोग भी है। अदरक का उपयोग मुख्यतया सब्जी, सलाद, मुख्या, अचार, चूर्ण, दवाईयों के रूप में होता है। अदरक का तेल भी निकलने लगा है। अदरक में बाप्पीशील तेल की मात्रा 0.5-2.3 प्रतिशत ओलिओरीमीन की मात्रा 4.5-10.5 प्रतिशत तक होती है। अदरक का शीतल पेय, ब्रांडी एवं एल्कोहल आदि में प्रयोग किया जाता है।

जलवायु- अदरक गर्म एवं नम जलवायु में अच्छी तरह उगाया जाता है। इसकी खेती समुद्र तट से 1500 मीटर तक की ऊंचाई पर भी की जा सकती है। अदरक की खेती वर्षा आधारित एवं सिंचित अवस्था में की जा सकती है। इसकी खेती के लिए बुवाई के समय मध्यम वर्षा, वृद्धि तक अधिक वर्षा की आवश्यकता होती है। कटाई एवं एक महीना पहले शुष्क वातावरण की आवश्यकता होती है।

भूमि:- अदरक विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाई जा सकती है लेकिन इसकी

अदरक उत्पादन तकनीक

खेती के लिए अच्छे जल निकास वाली जीवांश युक्त दोमट या बलुई दोमट मिट्टी उपयुक्त रहती है।

उन्नत किस्में:-

1) सुप्रभा- इस किस्म में फसल की अवधि 229 दिन तथा उपज 16.60 टन/हैक्टेयर होती है। इसमें सूखी सौंठ 20.5 प्रतिशत होती है। इस किस्म में आलियोरेजिन 8.9 प्रतिशत एवं आवश्यक तेल 1.8 प्रतिशत तथा रेशा की मात्रा 4.4 प्रतिशत तक पायी जाती है।

2) सुरुचि- इस किस्म में फसल की अवधि 218 दिन तथा औसत उपज 11.60 टन/हैक्टेयर होती है। इसमें सूखी सौंठ 23.5 प्रतिशत होती है। इस किस्म में आलियोरेजिन 10.0 प्रतिशत एवं आवश्यक तेल 2.1 प्रतिशत तक पायी जाती है।

बीज दर:- अदरक का बीज प्रकन्द होता है। बुवाई के लिए 2.5-5.0 सेमी लम्बे, 20-25 ग्राम वजन के जिनमें कम से कम 2-3 अंकुरित आंखें हो बोने के लिए उपयुक्त होते हैं। एक हैक्टेयर में बुवाई हेतु 15-20 बिंब टल प्रकन्दों की आवश्यकता होती है।

बीजोपचार:- अदरक के बीज किस्मों में वर्दा, हिमारी, महिमा, रेजाता आदि हैं।

भूमि की तैयारी:- अदरक की अच्छी खेती के लिए भूमि

को गर्मी के शुरू में अच्छी गहरी जुताई करके मिट्टी भुरभुरी बना ली जाती है।

बुवाई का समय:- अदरक की बुवाई का उचित समय ऊँची, 1 मीटर चौड़ी तथा अप्रैल से जून तक है। सिंचित

बुवाई की विधि:- वर्षा आदारित क्षेत्रों के लिए प्रकन्दों की बुवाई के लिए 4 सेमी 25-30 टन/हैक्टेयर नीम की खेती 2 टन/हैक्टेयर

- पोटाश 2 5 किग्रा. - 25 किग्रा कम्पोस्ट/गोबर की खाद 25-30 टन/हैक्टेयर

है तथा भूमि में नमी भी संकेत रहती है। पलवार से खरपतवार भी कम उगते हैं। पहली पलवार बुवाई के समय तथा दूसी व तीसी पलवार 40 एवं 90 दिन पश्चात बिछाना चाहिए। प्रथम पलवार के लिए 5-7 टन/हैक्टेयर हरे पत्तों की आवश्यकता रहती है।

निराई-गुडाई एवं मिट्टी चढ़ाना:- अदरक की फसल में आवश्यकतानुसार 2-3 बार खरपतवार निकाल देना चाहिए। खरपतवार निकालते समय 40 और 90 दिन पर राइजोम दिखने लगे तो मिट्टी चढ़ाना चाहिए।

2) राइजोम स्केल:- यह कीट खेत एवं भण्डारण में प्रकन्द का नुकसान पहचाता है। यह प्रकन्द का रस चूसते हैं जिससे प्रकन्द सूखा जाते हैं।

नियंत्रण- भण्डारण एवं बुवाई से पहले 0.03 प्रतिशत डाइमिथोएट के घोल से उपचारित करें।

प्रकन्दों की खुदाई- हरी अदरक के लिए इसकी खुदाई बुवाई के 180 दिन बाद करें तथा सूखी अदरक के लिये इसकी खुदाई बुवाई के 240-260 दिन बाद जब पर्याप्त भी पड़ जाये तथा धीरे धीरे सूखने लगे, की जानी चाहिए। खुदाई करते समय ध्यान रखें कि प्रकन्द करने न पाये। पौधों को सावधानी पूर्वक फावड़े या कुदाली की सहायता से उखाड़ कर प्रकन्द करने वाली जड़ और मिट्टी से अलग कर लेते हैं। खुदाई के बाद प्रकन्द करने के लिए 10-10 दिन के अन्तर पर सिंचाई करते रहें।

पलवार:- बुवाई के तुरन्त बाद धास फूस पत्तों की पलवार बिछाना लाभप्रद रहता है परन्तु बुवाई से पहले 3 ग्राम रिडोमिल /लीटर पानी में घोल कर 30 मिनट तक उपचारित करें।

सिंचाई:- बुवाई के समय पर्याप्त नमी रहनी चाहिए। अंकुरण के बाद शीघ्र सिंचाई करते देनी चाहिए। इसके बाद वर्षा होने तक नमी बनाये रखने के लिए 10-10 दिन के अन्तर पर सिंचाई करते रहें।

प्रकन्द गलन- पत्तियों का शीर्ष भाग पीला हो जाता है तथा नीम की खेती को भूमि में मिलायें।

प्रकन्दों की खुदाई- हरी अदरक के लिए 5-6 घण्टे तक डुबोकर रखा जाता है। इसके बाद अच्छी तरह सूखा लिया जाता है। इसी सूखी अदरक को सौंठ करते हैं।

भण्डारण:- बीज संग्रहण के लिए अदरक को पेड़ के नीचे छाया में गढ़ा खोदकर कन्दों को इस प्रकार रखा जाता है कि इसमें हवा के लिए काफी जगह बनी रहे। बीज प्रकन्दों को 0.3 प्रतिशत मेन्कोजेब या रीडोमिल के घोल में 30 मिनट तक उपचारित करके छायादार जगह पर खड़ा करें।

पौधे संरक्षण:- रोग एवं नियंत्रण

रोग एवं नियंत्रण

1) प्रकन्द गलन- पत्तियों का शीर्ष भाग पीला हो जाता है तथा नीम की खेती को भूमि में मिलायें।

2) राइजोम स्केल:- यह कीट खेत एवं भण्डारण में प्रकन्द का नुकसान पहचाता है। यह प्रकन्द का रस चूसते हैं जिससे प्रकन्द सूखा जाते हैं।

3) खुदाई- हरी अदरक के लिए 5-6 घण्टे तक डुबोकर रखा जाता है। इसके बाद अच्छी तरह सूखा लिया जाता है। इसी सूखी अदरक को सौंठ करते हैं।

4) खाद एवं उर्वरक:- खाद एवं उर्वरकों की मात्रा/हैक्टेयर

5) उर्वरक बोन का समय

6) उर्वरक बोन का समय

7) उर्वरक बोन का समय

8) उर्वरक बोन का समय

9) उर्वरक बोन का समय

10) उर्वरक बोन का समय

11) उर्वरक बोन का समय

12) उर्वरक बोन का समय

13) उर्वरक बोन का समय

14) उर्वरक बोन का समय



फसल अवशेषों में आग मत लगाइये, इससे जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ाइये

आग के एस राठौर, उप क्षेत्र प्रबन्धक, इफको ,रीवा (म प्र) हमारे देश में फसलों के अवशेषों (Crop Residue) का उचित प्रबन्ध करने पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है या कहने कि इसका उपयोग मृदा में जीवांश पदार्थ अथवा नत्रजन की मात्रा बढ़ाने के लिये नहीं किया जाकर इनका अधिकतर भाग या तो दूसरे घरेलू उपयोग में किया जाता है या फिर इन्हें नष्ट कर दिया जाता है जैसे कि गेहूं, गन्ने की हरी पत्तियां, आलू, मूली, की पत्तियां, पशुओं को खिलाने की जाती हैं या फिर फेंक दी जाती हैं। कपास, सर्नई, अरहर आदि के तेने गन्ने की सूखी पत्तियां, धान का पुआल आदि सभी अधिकतर जलाने के काम में उपयोग कर लिये जाते हैं।

इसी प्रकार गांवों में पशुओं के गोबर का अधिकतर भाग खाद बनाने के लिये प्रयोग न करते हुये इसे ईंधन के रूप में उपयोग किया जा रहा है जबकि इसी गोबर को यदि गोबर गैस संयंत्र में उपयोग किया जा रहा है तो इसका बहुमूल्य एवं पोषक तत्वों से भरपूर गोबर की सूखी प्राप्त करते हुए खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में उपयोग किया जा सकता है तथा योजना को सफल बनाने में आग न लगा कर इसे खेत की जीवांश पदार्थ को बढ़ाने में उपयोग करें।

हेतु शासन द्वारा गोबर गैस बनाने के लिये अनुदान भी दिया जाता है परन्तु फिर भी परिणाम संतोषप्रद नहीं है जबकि जमीन में जीवांश पदार्थ की मात्रा निरन्तर कम होने से उत्पादकता या तो घट रही है या विश्व हो गई है अत समय रहते इस पर ध्यान देकर जमीन की उर्वराशक्ति बढ़ाने पर ही कृषि की उत्पादकता बढ़ा पाना संभव हो सकता है जो कि देश की बढ़ती जनसंख्या को देखते हुये नितान्त ही आवश्यक है।

हमारे देश में हम फसल अवशेषों का उचित उपयोग न कर इसका दुरुपयोग कर रहे हैं जबकि यदि इन अवशेषों को सही ढंग से खेतो

